एक विषाद-भरी संवेदनात्मक लय

जय प्रकाश

सारा राय की कहानी 'अबाबील की उड़ान' हिंदी-कहानी के बहुप्रचलित रूपकल्प से अलग अपना सर्वथा नया तानाबाना बुनती है और कथ्य तथा शिल्प दोनअॅ धरातलअॅ पर भिन्न तरीक़े से यथार्थ को स्वायत्त करती है। इधर की कहानियाँ प्रायः घटनात्मक वास्तविकता को लक्ष्य कर रची गई और उस पर पूरी तरह एकाग्र जान पड़ती हैं। मगर 'अबाबील की उड़ान' का यथार्थ घटनाओं की बजाय जीवनानुभव के संवेदनात्मक और स्मृतिपरक गतिचित्रअॅ से निर्मित महीन अभिव्यक्ति में चरितार्थ होता है। नैरेटर यहाँ तटस्थ प्रेक्षक की तरह निर्लिप्त भाव से कथात्मक वास्तविकता को प्रस्तुत करने वाला असंलग्न और अदृश्य वक्ता न होकर सम्वेदना के स्तर पर कहानी की अंतर्वस्तु से सीधे साक्षात्कार कर और उसमें अंतर्लीन हो कर रचने वाला सजग प्रस्तोता है। यहाँ कथात्मक अनुभव की तहअॅ तक पैठ कर सारा राय ने उसकी रेशा-रेशा बुनावट को बारीक़ी के साथ पकड़ा है और एक ऐसी अभिव्यक्ति में ढाल दिया है, जिसमें सघन स्मृतियअॅ का भरा-पूरा अनुभव-संसार अत्यंत अर्थगर्भित ढंग से प्रकट होता है।

जैसे जल की सतह पर एक कंकड़ डाल देने पर उससे उत्पन्न लहरअॅ के वर्तुल धीरे-धीरे विस्तार पा कर अन्ततः जल में विलीन हो जाते हैं, 'अबाबील की उड़ान' का अनुभव-संसार ठीक उसी तरह एक धीमी लय में फैलते हुए अंत में अनुभव के उसी जल में समा जाता है। कहानी दरअसल यहाँ वर्तुलअॅ के बनने की प्रक्रिया की छाप या उसका साक्ष्य बन कर प्रकट होती है।

कहानी के बनने की यह प्रक्रिया कुछ उल्टी जान पड़ती है। कहानी रचने की प्रचलित पद्धति तो यही है कि अनुभव कथानक में ढल कर लगभग नियतिपरक ढंग से क्रमशः घटनात्मक विस्तार के ज़रिए आख़िरकार उपसंहार के उस क्षण तक पहुँचता है जहां कथा का मर्म साकार हो उठे। सामान्यतः कोई भी कहानीकार सृजन के दौरान कहानी के अंत, जिसे पुरानी भाषा में उपसंहार कहा जाता था, तक पहुँचने की कोशिश में समूची ऊर्जा झअॅक देता है; इस तरह एक सुगठित कहानी आकार लेती है। मगर सारा राय तो न कोई लक्ष्य तय करती हैं, न उन्हें कहीं पहुँचने की जल्दी है। वे अनुभव को कहानी की काया में धैर्य के साथ सिरजती हैं, इस बात की परवाह किए बिना कि वह किसी लक्ष्य, या कि कहानी के मर्मबिन्दु, को पा सकेगा अथवा नहीं। उन्हअॅने यहाँ सिर्फ़ इतना ही किया कि अनुभव को सघन विवरणअॅ में पूरी एकाग्रता के साथ आकार देने की कोशिश की है। इसलिए यह देख कर विस्मय होता है कि जिस कथा-मर्म की तलाश में कोई रचनाकार अंत-बिंदु तक पहुँचने के लिए बेचैन हो रहा होता है, वह जैसे 'अबाबील की उड़ान' कहानी के विवरणअॅ में यत्र-तत्र लगातार झाँकता प्रतीत होता है और अंत में जब वह अपनी विलक्षण क ंध के साथ प्रकट होता है तो पाठक च कता नहीं, संवेदनात्मक ऊष्मा से भर उठता है।। इसलिए सारा राय की कहानियअॅ को पढ़ना एक अलग तरह का अनुभव है, जहाँ लेखक की तरह पाठक को भी उपसंहार या कथा-मर्म तक पहुँचने की हड़बड़ी छोड़नी पड़ती है। वह लेखक के साथ एक अनिश्चित यात्रा पर चल पड़ता है और कहीं पहुँचने की कोशिश में व्यग्र होने की बजाए कथा की मूल संवेदना के साथ एकाकार होने लगता है। कहने की ज़रूरत नहीं है कि ऐसी कहानियअॅ में स्वभावतः पूर्वानुमेयता नहीं होती।

इस कहानी में सारा राय ने सूक्ष्मतर ब्यौरअॅ में आयत्त यथार्थ को गढ़ने के लिए 'देखने' की ऐन्द्रिक क्रिया का बख़ूबी इस्तेमाल किया है। पूरी कहानी एक-के-बाद-एक प्रकट होते दृश्यअॅ की अविरल शृंखला में गुँथी हुई है। इस तरह साकार हुई दृश्यात्मक वास्तविकता यहाँ सिनेमा के-से चाक्षुष विवरणअॅ में पसारा लेती और सम्वेदना के गतिशील बिम्बअॅ में विन्यस्त हो जाती है। निर्मल वर्मा ने सारा राय की कहानियअॅ में देखने की विलक्षणता को उचित ही लक्ष्य किया था और कहा था – 'कहानी में देखने का सुख उससे कहीं अधिक उज्ज्वल और उन्मुक्त होता है जो हम दैनिक दुनिया की लगी-बँधी रूटीन दुनिया में देखते हैं। यथार्थ-जीवन की रेल-पेल में केवल अवकाश के क्षणअॅ में ही विगत का जायज़ा ले पाते हैं। कुछ याद रह जाता है – कुछ हमेशा के लिए बह जाता है – किंतु कहानी में देखना ही परखने का काम देता है। कहानी के तथ्य और अवकाश की स्पेस में कोई विभाजन-रेखा नहीं है, सारा राय की कहानियाँ इस महत्वपूर्ण तथ्य को नई रोशनी में उजागर करती हैं।' निर्मल वर्मा ने तथ्य और

अवकाश के स्पेस की अविभाज्यता को स्पष्ट करते हुए उनकी कहानियॅ के संदर्भ में 'ऊपर की धूप और नीचे के अँधेरे' से मिलकर बने एक 'झिलमिलाते लैंडस्केप' का उल्लेख भी किया है जिसे सारा राय 'कथ्यात्मक धागे में बाँधकर समेटने का प्रयास करती हैं।'

'अबाबील की उड़ान' कहानी के संदर्भ में इस कथ्यात्मक धागे से बँधे झिलमिलाते लैंडस्केप की तलाश करें तो ज़ाहिर है, यह प्रकट वास्तव-संसार और भीतर के अँधेरे यानी अन्तर्लोक के गुह्य प्रदेश के बीच निर्मित कोई बेठोस-सी जगह होगी जहाँ सुख-दुःख में लिथड़ी कोई बीती हुई दुनिया, कुछ झीनी और अचीन्ही-सी, उभरती है। 'अबाबील की उड़ान' में यह दुनिया मृत्यु की पसरती छाया के बीच मानो शनैः-शनैः दुःख की लहर बन कर उमड़ती है। घनघोर बारिश के बीच जैसे रह-रहकर आशंका-भरी बिजली चमकती हो, इस कहानी में मृत्यु एक अज्ञात भय की क ंध बन कर अनिष्ट की घनी बदली के बीच बार-बार तड़ित-संकेत की तरह प्रकट होती है।

आठ बरस की रेशमा की मासूमियत और उसके बड़े भाइयॅ की खिलंदड़ वृत्ति के साथ बचपन की बेफ़िक्र मौजमस्ती में डूबे जीवन के सहज आनंद, कुतूहल, विस्मय और कल्पना की अबोध उड़ान के बीच लगातार अपशकुन की परछाइयाँ मँडराती हैं, जिन्हें बहुत महीन संकेतॅ में सारा राय ने खूबसूरती से बुना है।

इसे समझने के लिए कहानी के कुछ प्रसंगॅ पर ग़ौर करें।

एक प्रसंग है, जिसमें खेल-खेल में हौज़ में नहाने के मज़े के दरम्यान सहसा भाइयॅ में से किसी ने नीलिमा को धक्का दे दिया। 'दूसरे ही पल वह रोती, साँस के लिए फड़फड़ाती ऊपर आई और एक छलांग में हौज़ के बाहर कूदकर वह घर की तरफ भागी'।

थोड़ी देर बाद रेशमा ने देखा कि 'भाई अपनी खाकी रंग की निकर पहने पीठ के बल पानी पर तैर रहा था। उसकी पसलियॅ का उभार साफ़ नज़र आ रहा था। वह बिल्कुल साँस नहीं ले रहा था। तो इसका मतलब यह था कि वह लोग आज फिर मरने का वाला खेल खेल रहे हैं। बारी-बारी से सब मरेंगे और समय गिना जाएगा कि कौन सबसे देर तक शव बना रह सकता है। लाशें इसी तरह से पानी पर तैरती हैं, रेशमा ने सुना था। आँखें बंद कर पानी में लेटे रहो तो सचमुच लगता था कि दुनिया कहीं दूर, बहुत दूर चली गई है और बदन पर पानी का लहराता एहसास और बंद आँखॅ के पर्दे पर धूप और छाया के बदलते रंगॅ के अलावा कुछ नहीं सूझता था। कभी-कभी भी यही मरने का खेल घास पर खेलते थे। एकदम सीधे खड़े रहो होकर बिना पुट्ठे या किसी जोड़ को हिलाए, घास पर गिरना होता था, पेड़ की तरह। क्या मरना सचमुच इतना सुखद होता है?'

दूसरा प्रसंग है : 'एक बार रेशमा ने वह साँप देखा था जो अब्दुल माली ने मार कर पलाश के पेड़ के नीचे डाल दिया था। भूरा-भूरा सा था, क़रीब एक मीटर लंबा, वह पास जाकर देखना चाह रही थी पर नीलिमा बड़ी ज़ोर से चिल्लाई थी, नहीं, उसकी आँखें मत देखना, उनमें तुम्हारी तस्वीर छप जाएगी और साँप का साथी समझेगा, तुमने उसे मारा है। फिर वह तुमसे बदला लेने आएगा। यह सुनकर रेशमा के रॅगटे खड़े हो गए थे।'

तीसरा प्रसंग है : 'कई दिनॅ तक उसको मरने के ख़्वाब आते रहे। एक दूर तक फैला हुआ मैदान था, धूमिल-से आकाश के नीचे। किनारे लगे घने सिरस के पेड़ॅ की वजह से अंधेरा छा गया था। काफ़ी बड़ा मजमा था, जिसके सिरे पर काला चोगा पहने एक इंसान, आदमी या औरत, कुछ साफ़ दिख नहीं रहा था। एक पीले से पुराने पड़ते हुए काग़ज़ से मरने वालॅ के नाम पढ़ रहा था। जो अभी मरे नहीं थे उनके नाम के आगे मरने की तारीख भी दर्ज थी। लेकिन जब वह उनके नाम तक पहुँचता था, रेशमा की आँख एक खामोश चीख़ के साथ खुल जाती थी।'

'भाई कहते थे कि किसी मरे हुए इंसान को अगर ख़्वाब में देखो तो उसकी तरफ हरगिज़ नहीं जाना चाहिए, चाहे वह कितना भी बुलाए। अगर चले गए तो तुम भी मर जाओगे। कई बार उसने बिलासी बुढ़िया को ख़्वाब में देखा था। बिलासी

उनके घर चौका-बर्तन करने आया करती थी। फिर एक दिन सुनने में आया कि वह मलेरिया का शिकार हो गई है। रेशमा के ख़्वाब में वह हँसती हुई उसे बुला रही थी। उसके पोपले मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकल रही थी। रेशमा उससे दूर भागना चाह रही थी, लेकिन जैसा कि उसके ख्वाबअॅ में अक्सर होता था, वह आगे नहीं बढ़ रही थी।'

फिर एक और प्रसंग है। 'उसको वह दिन याद आया जब वह प्लाज़ा टॉकीज में भाइयअॅ के साथ पिक्चर देखने गई थी। उस दिन किसी ख़राबी की वजह से कुछ देर के लिए पिक्चर की आवाज़ ग़ायब हो गई थी। बिना किसी तरह के शोर के बस लोग पर्दे पर चल फिर रहे थे। '

इसके बाद साधु के आने का विवरण है जिसमें अम्मा के दिए दान से असंतुष्ट होकर साधु ने रेशमा के मन में ज़हर घोलते हुए अपशकुन-भरे वचन कहे थे – 'यह तुमने अच्छा नहीं किया। अभी तो मैं जा रहा हूं मगर दस तारीख को देखना।'

एक जगह अपशकुन का ज़िक्र है : रेशमा ने गिद्ध तो देखे थे लेकिन पीले रंग के गिद्ध वह पहली बार देख रही थी। वे गहरे पीले रंग के थे, जैसे कि किसी ने उनको हल्दी से रंग दिया हो।..... 'अम्मा ने बताया कि ये गिद्ध बहुत दूर से आते हैं। कई साल हुए हुए एक बार और आए थे। ये मामूली पंछी नहीं हैं। इनके आने का कुछ मतलब तो ज़रूर होता है। क्या कोई अनहोनी बात होने वाली है? ..... अम्मा कुछ देर बोली नहीं। उनके चेहरे पर आशंका की छाया फैल गई थी। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्हअॅने कहा ये छिड़बड़ी मनहूस होती हैं।'

ऐसे अनेक संकेत कहानी में लगातार उभरते हैं जो ऊपर से सहज-सामान्य नज़र आते हैं – और किशोरावस्था की देहरी की ओर बढ़ती रेशमा और उसके भाई-बहन के रहस्य, कुतूहल और मासूमियत से भरे अनुभव-संसार का स्वाभाविक हिस्सा हो सकते हैं। लेकिन उनके पृष्ठभूमि में सन्देह, विस्मय, अज्ञात भय और आशंका के झिलमिलाता रहस्य भी विद्यमान है।

थोड़ी गहराई में जाएँ तो इन रहस्यपूर्ण संकेतअॅ को समझ पाना मुश्किल नहीं है। साँप के दिखाई देने, बिलासी की मौत होने, प्लाज़ा टॉकीज़ में फिल्म देखते वक्त अचानक दृश्य से आवाज़ ग़ायब हो जाने, रेशमा को बार-बार मरने के ख़्वाब आने, लेटे हुए भाई को ऊपर से लाँघ जाने, दिन और रात के संधि-स्थल को शैतान का वक्त कहे जाने के प्रसंग में या सेमल के पेड़ की डालअॅ के वीरान हो जाने के प्रतीकार्थ में मृत्यु के अन्तःस्फुट संकेत छिपे हैं। इन्हें कहानी के अंत में भाई की मृत्यु की हृदय-विदारक सूचना की संगति में देखें तो सहसा उनका निहितार्थ मार्मिक ढंग से उजागर हो उठता है। क्या विडंबना है कि हौज़ में निःस्पंद लेटे हुए मृत्यु का अभिनय करने का खेल कहानी के अंत में पानी में डूबने से हुई भाई की मृत्यु की निर्मम वास्तविकता में बदल जाता है। लेकिन अनिष्ट की परछाइयअॅ से घिरे ये संकेत ऐसी कथात्मक स्वाभाविकता में गूँथे गये हैं कि अंत में जा कर ही उनके अभिप्राय खुलते हैं। अंडरटोन में कहानी कहने की यह कला हिंदी में अत्यंत विरल है।

यहाँ छोटे-छोटे स्मृति-बिम्बअॅ की शृंखला में रची अनुभूति की मार्मिक सघनता के साथ अवसाद की छाया धीरे-धीरे गहराती फैलती है और एक अबूझ रहस्य-वृत्त निर्मित करती है जहाँ कुछ अप्रत्याशित और अज्ञात घटित होने जा रहा है। वह नितांत अननुमेय है। लेकिन घट्यमान के संकेत कहानी निरंतर देती चल रही होती है। यह सूक्ष्म और सांकेतिक विवरण-कौशल के साथ संभव हुई अद्भुत कहानी है। पूरी कहानी में अनिष्ट के आगमन की आहट सतत सुनाई देती है जैसे कि वह पूर्व-नियत हो।

दुःख और आशंकाओं से भरी रेलयात्रा में रेशमा के भीतर भाई के साथ घटित अनिष्ट के लिए कहीं एक मासूम अपराध-बोध जन्म लेता है। उसे याद आता है, घास पर लेटे हुए भाई को लाँघ जाने पर उसने कहा था – ' किसी लेटे हुए इनसान के ऊपर से लाँघ कर नहीं जाना चाहिए। नहीं तो वह बढ़ता नहीं है; हमेशा वैसा का वैसा ही रह जाता है।' डूबने से भाई की मृत्यु हो जाने की सचाई उजागर होने पर रेशमा कहीं खुद को अपराधी मानने लगती है। मगर रेलगाड़ी की खिड़की से दूर आसमान में कहीं उड़ती दिखाई दे रही चिड़ियअॅ के अबाबील होने का अनुमान कर वह क़यास करती है कि अगर वह अबाबील है तो भाई ज़रूर वापस आएगा। रेशमा के पास इस मासूमियत-भरे विश्वास का पुख़्ता आधार है, जिसे खुद भाई ने बताया था कि सारी

चिड़ियअॅ में सबसे ऊपर उड़ने वाली अबाबील को कोई शिकारी नहीं पकड़ सकता। इस विश्वास और उसके साथ जुड़े संदेह के बीच झूलते अधर में कहानी का सत्य स्पंदित होता है।

यथार्थ के प्रत्यक्ष आयाम में घटित होने पर भी इस कहानी का मर्म प्रत्यक्ष घटनात्मक स्तर पर प्रकट नहीं होता। वह रेशमा के निश्छल अंतर्जगत के भीतर-ही-भीतर सुलगते ताप में, उसकी अबूझ-सी आस्था और दुश्चिंता से भरी कशमकश में विकसित होता है। ज़ाहिर है, वह आयातित या आरोपित नहीं, उसे किसी प्रत्याशित सत्य या निष्कर्ष से प्रमाणित करने की आवश्यकता भी नहीं; वह किसी परिणति को भी प्राप्त नहीं होता – एक वेदना-भरे अनुभव का समूचा वृत्त जैसे उसके भीतर से धीरे-धीरे उभरता है और पाठक उसके जादू से घिर जाता है।

प्रत्यक्ष वास्तविकता को अंतर्जगत के अनजान इलाक़अॅ में स्थगित कर उसकी अन्तर्ध्वनियअॅ को सुनने की यह बारीक़ कला है। घटनात्मक वास्तविकता के कोलाहल से दूर यह एक विषाद-भरी लय है जो धीरे-धीरे संवेदना की सतह पर फैलती है।